उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद।
– इक़बाल

ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल
(मासिक)

रजि: RAJH/9396 | अंक अप्रेल : 2009 | वर्ष –16 | अंक 9 | मूल्य 3 रु | वार्षिक 35/– रु.

चुनाव मई 2009 में

दाऊदी बोहरा जमाअत (रजि.), और बोहरा यूथ एसोसिएशन, उदयपुर के चुनाव एक साथ माह मई 2009 के आखिरी हफ्ते में होंगे। ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में चुनाव में हिस्सा लेकर अपनी संस्थाओं को मज़बूत करें।

हमको जगा दिया है अहसान कम नही...

उदयपुर 5, मार्च। लुकमान जी साहब की दरगाह के बाहर के दोनों छोर पर बनी दुकानों में जहां दाउदी बोहरा वेलफेयर सोसायटी के दफ्तर चल रहे थे, उन्हें तोड़ कर दरगाह के सहन में तब्दील करने की शबाब गुट की कोशिशों के तहत जोधपुर हाई कोर्ट में चल रहे केस के फैसले के मुताबिक ''वक्फ की गयी जायदाद के मुकदमें पहले वक्फ ट्रिब्यूनल में सुने जाये व उसके फैसलो पर आगे कार्यवाही की जाये। माने यह केस हाई कोर्ट में चलने के बजाय पहले वक्फ ट्रिब्यूनल सुने जाये।

हाई कोर्ट के इस फैसले पर शबाब के लोगों को उनके लीडरान ने गुमराह किया और तुरत–फुरत दुकानों को सहन मे तब्दील करने की बैजा कोशिश की जिससे गैर जरूरी विवाद पैदा हुआ। बोहरा यूथ के एहतिजाज़ के चलते शबाब की यह कोशिश नाकाम रही और पुलिस व प्रशासन की सूझ बूझ से बिना किसी झगड़े के इसे रोका जा सका।

इस झगड़े के दौरान शबाब के लीडरान की बोखलाहट का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि गुस्से और खीज में पुलिस प्रशासन को यह धमकी दे डाली कि ''हम तो जमाअत और दीगर जगहों पर इसी तरह कब्जा करेंगे आप रोक कर देखे।''

दो दिन कब्ल मीलादुन्न नबी के मौके पर खांजी पीर के बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल व ''बेस'' (Base) के केम्पस में फसाद पैदा करने की गरज से खांजी पीर में मुकीम शबाब के लोगों की दावत पूरी योजना के तहत बोहरा यूथ के बेस केम्पस में रखी गयी जिसे में बोहरा यूथ के नौजवानों ने जबरदस्त विरोध कर केम्पस से बाहर निकाला। विरोध के दौरान यूथीयों के अकीदों पर सवालिया निशान लगा कर खुद अकीदतमंद बनाने वाले शबाब के लोगों को नौजवानों ने चेहलुम के मौके पर 15 फरवरी को अफ्रीका से रिले की गयी सैयदना साहब की वाअज का हवाला दिया और कहां कि क्या आप वाकई सैयदना साहब के फरमान पर अमल करते है या आमिल की बातों पर तवज्जो देकर ऐसी बेजा हरकत करते है।

केम्पस को खाली करवा कर लौटे नौजवानों ने मीलादुन्नबी की मजालिस खान पुरा मस्जिद के बजाय लुकमान जी साहब की दरगाह में मुक्कमल की। और तहिइया किया कि शबाब की हर एसी हरकत का हत–उल इमकान शान्ति पूर्ण तरीके से विरोध कर जवाब दिया जायगा।

दुआए ख़ैर

सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन साहिब त.उ.श के अचानक सेहत बिगड़ने पर पूरी बोहरा बिरादरी में गहरा शोक छाया हुआ है। बोहरा यूथ, दाउदी बोहरा जमाअत के सभी अफराद बारगाहे इलाही में दुआ के तलबगार है कि पाक परवरदिगार आपको ''शिफाय कुली'' अता फरमाये, आपकी उम्रदराज करे, आपकी शफक्कत हमेशा हम पर बाकी रहे। अमीन!

इदारा

3 मई को होंगे स्टूडेन्ट्स सम्मानित

दी बोहरा वेलफेयर सोसायटी (मण्डी एसोसिएशन) की जानीब से हर साल की तरह इस साल भी माँ फातिमा–तुज–ज़ेहरा (अ.स.) की शहादत की मजालिस में छात्र व छात्राओं को सर्वाधिक नम्बर लाने पर अवार्ड देकर प्रोत्साहित किया जाएगा।

सोसायटी के सचिव, हाजी कमरूद्दीन मण्डीवाला ने बताया कि इस साल भी कक्षा 1 से 5 तक 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले सभी स्टूडेन्ट को कक्षा 6 से कक्षा 12 तक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार, ग्रेज्युएट पोस्ट ग्रेज्युएट को 60 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले सभी छात्र छात्राओं को एवं इसी के साथ प्रोफेशनल कोर्स में उत्तीर्ण रहे सभी छात्र–छात्राओं को सोसायटी द्वारा अवार्ड देकर प्रोत्साहित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इस साल 2009 अवार्ड में उन बच्चों को भी अवार्ड दिए जाएंगे जिनके रिज़ल्ट पिछले साल मजलिस के बाद घोषित हुए थे। स्टूडेन्ट अपनी मार्कशीट 24 अप्रेल, 09 तक उनके पास जमा करवा सकते है।

मुल्ला हाजी ईस्माईलजी अत्तरवाला ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी हाजी हिब्तुल्ला अत्तारी ने बताया कि गुजिश्ता सालों की तरह इस साल भी यह शिक्षा, खेल कूद, समाज सेवा आदि क्षेत्र में ऊँचा मुकाम हासिल करने वालो को दिया जाएगा।

सैंन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी की आम सभा

सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी की आम सभा उदयपुर में आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता, जनाब आबिद अदीब ने की। तिलावतें कुराने पाक से सभा का आयोजन किया गया।

बोहरा यूथ एसोसिएशन एवं दाऊदी बोहरा जमात द्वारा सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी के बाहर से आए प्रतिनिधियों एवं महासचिव डॉ जनाब असगर अली इंजीनियर के उदयपुर आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया गया।

महासचिव डॉ इंजीनियर ने सभा में पूरे वर्ष का लेखा–जोखा पेश किया। सभा में बोहरा समाज की संगठनात्मक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति पर विचार विमर्श किया गया, व बोहरा सुधारवादी आंदोलन में आने वाली कठिनाईयों पर रोशनी डाली और उनके निराकरण के लिए मार्गदर्शन दिया। भविष्य के लिए रणनीति तय की गई एवं सभी संस्थानों को अधिक मज़बूत एवं शक्तिशाली बनाने के लिए तथा बोहरा सुधारवादी आंदोलन को गति प्रदान करने, विचार विमर्श कर निर्णय लिए गए।

सभा में मुम्बई के सैफुद्दीन इंसाफ तथा जनाब युनुस बालूवाला ने दाऊदी बोहरा जमात, मुम्बई की जानकारी दी तथा दाऊदी बोहरा जमात के अध्यक्ष, जनाब आबिद अदीब, जनाब मंसूर अली कंमाडर, जनाब हिब्तुल्ला अत्तारी तथा बोहरा यूथ, लेडीज़ विंग के सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए।

दाऊदी बोहरा जमात के सचिव, जनाब गुलशन अब्बास ने आगामी मई 2009 में जमाअत के तथा बोहरा यूथ संस्थान के होने वाले चुनाव की जानकारी दी।

- हुसैन उदयपुरी

हमारा सवाल: तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए नौजवानों को किस तरह प्रोत्साहित किया जाए ? आपके सुझाव !

The role of youngsters in our movement. How can we encourage them to join in?

Please send your contribution to: The Editor : All World Bohra Journal , 73 Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

इदारिया

रबीउल आखिर का ये महीना जुमला मोमिनीन के लिय मसर्रतो शादमानी का महीना है कि इस माह में अमीरूलमुमिनीन अली मुरतजा (अ.स.) के फरजंद और 21वें इमाम इमामुज्जमान मौलाना तैयबब (अ.स.) और दुआतुलअकरमीन के सिलसिले के 52वें दाई सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन साहब त.उ.श. की विलादत हुई। अहले–विला को दोनों बुजुर्ग सरदारों की सालगिरह मुबारक हो।

हमारा इस्माइली तैयबी दाउदी बोहरा फिरका इन्हीं बुर्जुगाने–दीन की रहनुमाई के सबब ही सदियों से मज़हब, शरीयत और अकीदे का पाबंद और मुत्तहिद रहा है। इसी इत्तेहाद और इत्तेफाक के सबब इमामुलमुत्तक़ीन और दुआतुल अकरमीन के दौर और गुजरते जमानों में काफी तकलीफें दिक्कतें और हॉलनाक मुसीबतें झेल कर भी अपने मुकाम पर सही सलामत और साबित कदम रहा। ना मुआफिक हालात में भी अपने पुख्ता अकायद, मज़हबी तालीमात और अख़लाक व अतवार को अपने पैशवाओं की कुरबानियों के जरिये महफूज़ रखते हुए अपनी पहचान आज तक क़ायम रखने में कामयाब रहा है।

लेकिन वक्त तेज रफ्तारी से गुजरता रहता है नयी–नयी चीज़ें पुरानी होती जाती हैं। नये हालात के पेशे नज़र तरह तरह के हालात बनते हैं। कुदरत के दस्तूर के मुताबिक कदामत की जगह जदीदियत लेने लगती है। शरीयत तो कायम रहती है। लेकिन रस्मों–रिवाज में तब्दीलियां पैदा होती रहती हैं। नये पुराने की इस कशमकश और ख़ीचातान में आदमी की सोच बदलती रहती है और खुदगर्जी इससे फायदा उठाती है। फिर्के फिर गिरोहों में तकसीम हो जाते हैं। और आम आदमी भ्रम और गुमराही का शिकार हो जाता है। हमारा फिर्का भी इससे अछुता नहीं है। और समय–समय पर जो माहौल हमारी कौम में बनता रहा, किसी से ढ़का–छुपा नहीं है।

ऐसे हालात में चापलूसी, इकतिदार की हवस और दौलत की ख्वाहिश ज़ोर पकड़ जाती है। और शुरू होता है मेल–मिलाप के बजाय अलगाव, मोहब्बत के बजाय नफरत, बेज़ारी, इल्जाम तराशी, तल्खकलामी, कीना–परवरी और कितनी ही ऐसी बुराईयां जो इंसान को इंसान से अलग करती है, हैवानीयत को बढ़ावा देती है और कौमों को रूस्वा कर देती है। जुल्म हद से आगे निकल जाता है। फिर इन हालात के चलते मजलूमों, मुफलिसों और खुदगरजी के शिकार लोगों के लिये कोई आवाज़ उठती है तो उसकी मुखालिफत इस हद तक की जाती है कि इंसानियत पनाह मांगती है। लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। कोई जिंदा जल जाता है। किसी की लाश बरहना हो जाती है। कोई गटर की नज़र हो जाता है। कोई बीवी–बच्चों से हाथ धो बैठता है। कोई बेसहारा हो जाता है। कोई जबरदस्ती लानतों का बोझ सहता है। कोई जुबान खो बैठता है। किसी के हाथ पैर सलामत नही रहते और यह सब हमारे सामने होता है हम सब तमाशाबीन होकर देखते रहते हैं। लुत्फ तो यह है कि कसरत से लोग इस खेल में जोशो खरोश से शरीक भी होते हैं। आपस में गाली गलोज, मार–पीट करते हैं, मुकदमें बाजी शुरू हो जाती है। इन सब आफतों को हमने बर्दाशस्त किया है और यह भी जानते हैं कि इससे हमारी क़ौम को ज़बरदस्त नुकसान हुआ है और हो रहा है और कुछ खुदग़र्ज लोग इसका फायदा उठा रहे हैं। अब इन बातों के खिलाफ कभी आवाज उठती हे तो उन्हें मुद्दई कह कर दबाने की कोशिश की जाती है।

मुद्दई उसे कहते हैं जो किसी ओहदे या चीज़ का दावेदार हो। लेकिन हम अपनी कौंम के बीते हुए वर्षों पर नज़र डालते हैं और उनकी इस्लाही तहरीक और उसकी तहरीर और तकरीर पर नज़र डालते हैं तो साफ लगता हे कि वह लोग किसी ओहदे या इकतिदार या किसी चीज के दावेदार नहीं हैं, बल्कि वह इन खामियों को दूर करना चाहते हैं जो हमारी कौम को नुकसान पहुंचा रही हैं। और यह बात इस बात की शहादत हे कि उनके दिल में कौम के लिये हमर्ददी ओर कौम को तरक्की पर ले जाने के ज़ज्बात और हमारे बहुत पहले से ऐसी इसलाही तहरीकें खुलूस के साथ हमारी कौम मे चली आ रही हैं और नज़र आता है। इकतिदार पसंदों ने तहरीक चलाने वालों को ही नहीं बल्कि उनके पूरे खानदान को नफरत और हसद के गहरे ग़ार में ढ़केल दिया। हांलाकि ये लोग कौम की भलाई के अलावा और कोई मकसद नहीं रखते थे।

फिर भी उन्हें मुद्दई कहा गया जिसे इसांफ नहीं कहा जा सकता। यह दानिस्ता मुजरिमाना हरकत आज तक कौम को भ्रम में डाल रही है।

इस वक्त बोहरा यूथ और सेंट्रल बोर्ड की इसलाही तहरीक भी कौम की बहबूदी के लिये चलाई जा रही है इसमें शामिल लोग ओहदे या इक्तिदार के दावेदार नहीं बल्कि शरीअत और अपने इसमाइली अकायद की पाबंदी करते हुए दुआतुल–अकरमीन के सिलसिले को मानते हैं और हरगिज अपने मज़हब के खिलाफ नहीं है।

ये चंद बातें जिनका जिक्र उपर किया गया है उन पर कौम के हर शख्स को गौर करना चाहिये और कौम को ग़ारतगिरी से बचाने की कोशिश करनी चाहिये।

आखिर में जो लम्हात हम पर गुजर रहे हैं उन्हें देखते हुए सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन साहब की उम्र दराजी और सेहतयाबी के लिये बारगाहे इलाही में दुआ के तलबगार हैं।

आबिद अदीब

जुलूसे-मोहम्मदी जोशो-खरोश के साथ निकाला गया

10 मार्च को हज़रत मोहम्मद (स.अ.) की विलादत के मौके पर उदयपुर के मुस्लिम समुदाय द्वारा "जुलूसे–मोहम्मदी" परम्परागत रूप से जोशो–खरोश के साथ निकाला गया।

हर साल की तरह इस साल भी जुलूस के इस्तकबाल के लिये बोहरा यूथ की जानिब से हाथीपोल में उदयपुर अरबन कॉ–ओपरेटिव बैंक लिमिटेड के नीचे सबील के रूप में काउंटर लगाया गया, जिसमें हाज़रीने जुलूस का शरबत पिला कर इस्तकबाल किया गया।

इस काउंटर पर दाउदी बोहरा जमाअत के सदर आबिद अदीब के अलावा जमाअत के जोइंट सेक्रेट्री हुसैन उदयपुरी, मुल्ला पीर अली, बोहरा यूथ मेडिकल यूथ रिलीफ सोसायटी के अनीस मियांजी, सरफराज राजनगर वाला, सिराज पलाना वाला, अल्ताफ भालम वाला, असगर मुमिन जी वाला, हामिद महू वाला, स्टूडेंट वेल्फेयर सोसायटी के तौसीफ मण्डी वाला, तौसीफ टिडीवाला, मुबारक उदयपुरी, बोहरा यूथ के युसुफ आर.जी., नासिर जावेद, कय्यूम अली मशरकी, फज़ल अब्बास ब्यावर वाला, लुकमान ताज, अब्बास अली गुरावाला, फखरूद्दीन टेलर और बोहरा यूथ एसोसिएशन कुवैत के सरफराज़ आर.वी. और आशिक डी0एम0 ने जुलूस में शामिल सभी मुस्लिम भाईयों को दाउदी बोहरा जमाअत और बोहरा यूथ के तमाम मेम्बरान की जानिब से मुसाफा–गले मिल कर "ईद मीलादुन्नबी" की दिली–मुबारकबाद पेश की और शरबत पिलाकर उनका दिली खेरमकदम किया गया।

बोहरा यूथ मेडिकल यूथ रिलीफ सोसायटी और स्टूडेंट वेल्फेयर सोसायटी के कारकुनान काउंटर तक नहीं पहूंच पा रहे जुलूस में उंट–घोडागाड़ी, कार–जीप, टेम्पो, स्कूटर, बाईक पर सवार बुजुर्गों, मर्दों–औरतों और बच्चों को पानी और शर्बत पिला रहे थे।

इस मौके पर बोहरा यूथ गर्ल्स विंग उदयपुर की ख़्वातीन कारकूनान भी मौजूद थी। गर्ल्स विंग की रेहाना बानू जर्मन वाला, नफीसा गोरिया वाला, सारा इटारसी आदि कारकूनान ने जुलूस के बाद मौके पर मौजूद मुस्लिम ख़्वातीन को भी शरबत पिलाकर " ईद मीलादुन्नबी" की मुबारकबाद पेश की गई।

.नासिर जावेद

ख्वातीन की गिरती सेहत पर प्रोग्राम

21 मार्च को बोहरा यूथ सेंटर फॉर सीनियर सीटीजन के जानिब से ख्वातीन की गिरती सहत और उसके निवारण पर बोहरा यूथ कम्यूनिटी हॉल मे चर्चा रखी गयी।

प्रोग्राम को डॉ सकीना राज़ ने खिताब किया।

चर्चा में 100 से ज्यादा बहनों ने शिरकत की। और अपनी अपनी परेशानीयों के लिये समाधान के लिये जानकारी हासिल की इस मौके पर डॉ फातिमा सिराज ने अपने विचार रखे। और बहनों की परेशानीयों को दूर करने के उपाय बताये।

बहनों एसे प्रोग्राम बार बार रखने की जरूरत पर जोर दिया और बोहरा यूथ सेंटर फॉर सीनियर सीटीजन के कारकुन से दरख्वास्त की कि एसी चर्चाएं दो माह में कम से कम एक बार रखी जाय जिससे हम ख्वातीन अपनी सहत को maintain रख सके।

Best Compliments From :

खाँजीपीर मेमोरियल ट्रस्ट, उदयपुर

अपने इदारों की मज़बूती और ज़रूरत मन्दों की मदद के लिये ट्रस्ट फण्ड में चंदा देकर सवाब हासिल करें।

सम्पर्क : आबिद हुसैन अदीब (मैनेजिंग ट्रस्टी)

बोहरा यूथ सीनियर सीटीजन के सेहत पर प्रोग्राम

उदयपुर 18 मार्च को बोहरा यूथ सेंटर फॉर सीनियर सीटीजन की और से बुजुर्गों की गिरती सहत और रोकने के उपाय को लेकर प्रोग्राम रखा गया। इस मौके पर केनाडा से तशरीफ लायी डॉ. सकीना राज़ ने बहुत सादा लफ्ज़ों में छोटी–छोटी बीमारीयां होने के कारण और उसके निवारण के तरीकों पर रोशनी डाली और कहां कि बुजुर्गों के तजुर्बो से फैज़याब होने के लिये उनकी छोटी–छोटी परेशानीयों को समझना उसे पूरा करना सोसायटी की जिम्मेदारी है।

सेंटर को बड़े स्तर पर चलाने के लिये दुनिया में बुजुर्गों के लिये चलाये जा रहे सेंटर के financial planning की भी चर्चा की।

इस मौके पर जनाब अदीब साहब, लियाकत अमर व हुसैन उदयपुरी ने अपने विचार रखे और बोहरा यूथ व जमाअत से हर मुमकिन तआवुन देने का अश्वासन दिया।

अलमास जयपुरी महाराणा फतहसिंह अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर, महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन की ओर से शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं खेलकूद के क्षेत्र में 2007–2008 में सराहनीय प्रदर्शन करने वाले 96 छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया, जिसके तहत शैक्षिक स्तर पर 41 विद्यार्थियों को सराहनीय प्रदर्शन करने पर महाराणा फतहसिंह अवार्ड से सम्मानित किया गया। जिनमें बोहरा यूथ की ईकाई स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसायटी से जुड़ी अलमास जयपुरी को उदयपुर से सीनियर सैंकंडरी की परीक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त करने पर 751 रूपये नकद, एक मेडल व प्रसंशा पत्र देकर सम्मानित किया गया।

ज्ञात है कि 27 दिसम्बर, 2008 को आगरा में मुस्लिम अवार्ड समारोह में भी अलमास जयपुरी को राष्ट्रीय स्तर पर सराहनीय प्रदर्शन करने पर माननीय केन्द्र मंत्री श्री रामविलास जी पासवान द्वारा अवार्ड देकर सम्मानित किया गया था।

ईद–ए–मीलादुन्नबी मनाया गया

बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमात की ओर से मस्ज़िद खानपुरा में हज़रत मोहम्मद (स.व.स.) साहब का जन्म दिवस ईद–ए–मीलादुन्नबी हर्षो उल्लास, श्रृद्धा, अकीदत और अहतराम के साथ मनाया गया।

मुल्ला पीरखान साहब की सदारत में मजलिस हुई, जिसकी शुरूआत तिलावते कुरआन से हुई। बाद में वाअज, तकरीरें, नातिया कलाम पेश किए गए एवं नियाज का आयोजन किया गया। इस मौके पर सभी मस्जिदों पर रोशनी व सजावट की गई, इसमें बड़ी संख्या में लोगों ने शिरकत की। महिलाओं की भी भीड़ थी और परीक्षा की तैयारी के बावजूद विद्यार्थियों ने हाज़री देकर खिराजे अकीदत पेश की।

अपने अध्यक्षीय भाषण में मुल्ला पीर साहब ने इस्लाम का अर्थ अमन और शान्ति बताते हुए सभी से इस राह पर आगे बढ़ने का आग्रह किया, उन्होंने पैगम्बर हज़रत मोहम्मद साहब के सादा जीवन एवं उच्च विचारों पर रोशनी डाली गई।

मजलिस का समापन दुआईयॉ कलेमात के साथ हुआ, सुधारवादी आंदोलन को फैलाने और मजबूत करने व मुल्क में अमन चैन एवं खुशहाली के लिए दुआए मांगी गई।

1 मार्च बोहरा समाज का काला दिन

1 मार्च बोहरा समाज के इतिहास पर कलंक है। बोहरा धर्मगुरू सैयदना की मौजूदगी में गलियाकोट स्थित मज़ार में हुए शर्मनाक काण्ड की निन्दा करते हुए इस स्मृति में हर वर्ष बोहरा यूथ द्वारा अनेक जनकल्याण के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं एवं काले कपड़े और काली पट्टियां बांध कर विरोध प्रकट किया जाता है।

बोहरा सुधारवादियों का यह संघर्ष धार्मिक कट्टरता एवं रूढ़ियों के नाम पर किए जा रहे अमानवीय अनैतिक अत्याचारों के विरूद्वहैं, यह आधुनिक जगत में सामाजिक परिवर्तन एवं वैचारिक क्रान्ति का आंदोलन है।

बोहरा यूथ संस्थान केन्द्र एवं राज्य सरकारों से तारकुण्डे–नाथवानी कमीशन रिपोर्ट एवं जस्टिस टेवटिया कमीशन रिपोर्ट (दाउदी बोहरा कमीशन रिपोर्ट) की सिफारिशों एवं बोहरा समाज की सम्पत्तियों को तिरूपति मंदिर एवं अजमेर दरगाह शरीफ एक्ट की तरह लागू करने का आग्रह करती है।

हुसैन उदयपुरी

आज के दिन हुई थी सामूहिक विवाह की शुरूआत

उदयपुर शहर में बोहरा जमात का पहला सामूहिक विवाह ठीक 34 साल पहले सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी के अन्तर्गत हुआ था।

16 मार्च 1975 को भंडारी दर्शक मंडप में लाखों लोगों की मौजूदगी में समारोह हुआ था जिसमें 130 जोड़ों की शादी करवाई गई थी। यह कुरीतियों, रूढ़िवादिता, कट्टरपन एवं धर्म की आड़ में शोषण से लड़ने की दिशा में पहला कदम था। उक्त आयोजन की रजत जंयती के उपलक्ष्य में 16 मार्च 2000 को भव्य समारोह हुआ था, जिसमें 130 जोड़ों के बच्चों ने अपने माता पिता को मुबारकबाद देते हुए गुलदस्ते भेंट किए थे।

हर वर्ष 16 मार्च का दिन विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हर वर्ष की तरह इस बार भी सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी, दाऊदी बोहरा जमात एवं बोहरा यूथ संस्थान ने सभी जोड़ों को शादी की सालगिरह की मुबारकबाद दी है।

आज तक 12 समूह लगन के दौर हो चुके है और भविष्य में भी इसकी तैयारी के लिए समाज में विचार विमर्श चल रहा है।?

- हुसैन उदयपुरी

बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी उदयपुर (राज.)

Phone No. 2424886

The Bohra Youth Medical Relief Society which is actively involved in all sorts of Medical Services to the poor and the needy has now announced the formation of Bohra Youth Medical Trust and targets to collects Rs. 50 lakhs to fulfill its ambitious future plans.

This trust under the umbrella of the Dawoodi Bohra Jamaat is duly registered. We look forward to your generous support for the trust.

Note : you may also apply for the membership of Bohra Youth Medical Relief Society 20% discounts on all medical facilities at Bohra Youth Medicare Centre.

Letter to the Editor :

आप अपने तअ्स्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001, E-mail : bohra.journal@hotmail.com

Expert Speak

Every month we bring you a regular column on management studies by a management expert in the hope that it benefits our young readers.

Winning Strategies - Coping With Stress

Stress is the most frequently used term today in all fields, may it be in the life of a student, housewife or executive. Top stress players are - overload, deadline, pressure, domestic disharmony, excessive touring, long working hours, unhealthy work environment, urgency of targets, no time for family or friends, unhealthy competition, uncertain future, etc.

Sources of stress

We generally take tension of the past, create anxiety for the future and spoil our present.

Ask yourself -

1. Do you feel lonely?
2. Do you rush through your task to get them done as quickly as possible?
3. How important do you feel your role is at home and workplace?

When under stress, an individual experiences symptoms which are not normal to his behaviour

- Subhash Jagota

Unplanned work, confused priorities, poor time management, inability to work as a team, mismatch between once performance and the superior's expectations, etc, may lead to stressful situations which can be detrimental to one's health and career.

We all have tendency to ignore stress. We take it as a phase of life. Gradually, stress keeps piling up and one fine day it poses a grave threat.

At first, a symptom of restlessness is found. It increases and shows lack of concentration, sleeplessness, irritation, frustration and leads to a complete stage of depression.

Remedial measures

We should develop our capacity to bring stress level down to the minimum. Try out the following action plans.

- Keep refreshing surroundings
- Plan your work and decide the priorities
- Identify your areas of strength and concentrate on it
- Be self-reliant and independent
- Develop emotional intelligence
- Develop your subordinates
- Treat your family as the foundation for success.

However, contrary to popular belief, stress is not always harmful. In right amount, stress helps in making a person alert and proactive. Positive stress helps you convert your plans into action. But an effort has to be made in reducing the stress, thus creating an environment that is healthy and free of tension.

Eliminate stress for success

- Dr. Kaneez Fatima Sadriwala
Professor-cum-Director,
Aravali Institute of Management Studies,
E-mail: moizkaneez@yahoo.com

PERSONALITY DEVELOPMENT : PART-I

Let Us Define Personality

Let me start explaining personality on a rather different note (zara hat ke!!). To me it is like a recipe wherein the right ingredients in right quantities make a good dish and a slight mismatch of one or more ingredients spoils the dish. The dish here is the overall personality while the ingredients are the qualities that make a personality. If you ask boys to define personality, some would say "Fair, tall, slim and beautiful". Similarly girls would say, "Tall, dark, handsome and rich".

Well, in both the cases the dish is incomplete. There are a number of ingredients missing. So much on the lighter side.

The subject is so vast that if you carry out a web search on personality, you will perhaps get more than 100 million search results and if you look for books on the subject, you may not be able to decide which book to read. I will, therefore, restrict myself to a simple write-up based on my observations and experience as career counselor.

In this part we will cover the broad definition of personality.

The Oxford Dictionary says personality is "Distinctive Personal Character", meaning no two personalities can be same. The word character covers the various attributes or qualities or ingredients! That make the overall personality. So what are these attributes that make your personality. To my mind, the personality of a person can be broadly divided into two parts as follows :

Physical appearance (in our language we say 'soorat')

The inner qualities (what we call as 'seerat')

While the first part or physical appearance does play a significant role in the projection of your personality, it is the second part or inner qualities that plays a major role. Some of the inner qualities that instantly come to my mind are :

- Communication skills
- Confidence level
- Attitude
- Humane Approach
- Self Discipline

The natural formation and development of personality is dependant on two main factors. The foremost factor is, of course, genetic, meaning you inherit certain qualities from your parents or your family tree.

Your personality plays a very significant role in all spheres of your life, be it your career, your personal and social life, your physical and mental health, etc, etc.

The other factor is related to the influence of the environment and company in which you grow up from childhood. In both the cases, the influence is very strong and difficult to change. Success of your own efforts in development of your personality comes next and is dependant on how sincerely you try to acquire positive attributes and get rid of the negative attributes in your personality.

Your personality plays a very significant role in all spheres of your life, be it your career, your personal and social life, your physical and mental health, etc, etc. It is also important to note that there is no personality that scores 100 out of 100.

So much for Part I.

We will make an attempt to discuss the attributes of personality or the inner qualities and their impact on your life in the subsequent parts. So long then!

- Siraj

स्कूल का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

28 फरवरी का बोहरा यूथ सैंकंडरी स्कूल का वार्षिक उत्सव समाजसेवी, श्री मनोहर लाल सरूपरिया की अध्यक्षता एवं सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ0 महीप भटनागर के प्रमुख आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर कई रंगारंग, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों द्वारा पेश किए गए। सांस्कृतिक संध्या का मुख्य आकर्षण कन्या भ्रूण हत्या नाटक रहा, जिसका निर्देशन श्रीमती जोहरा खान ने किया। समारोह की शुरूआत में जिला शिक्षा अधिकारी, श्री भंवरलाल रेगर का शुभ संदेश सुनाया गया वहीं विशिष्ट अतिथि पत्रकार डॉ. त्रिलोक शर्मा एवं श्री मुनव्वर राही द्वारा बच्चों को पुरूस्कार दिए गए।

संस्था के अध्यक्ष, श्री आबिद अदीब ने अतिथियों का स्वागत किया। श्री हुसैन उदयपुरी ने धन्यवाद प्रेषित किया। समारोह का संचालन सुश्री नेहा खान एवं सानिया रिज़वी ने किया।

– जोहरा खान

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में ईद मीलादुन्नबी मनाया गया

बोहरा यूथ पब्लिक सैंकंडरी स्कूल परिसर में ईद मीलादुन्नबी समारोहपूर्वक मनाया गया। इसमें मेहमाने खुसूसी अनीस मियांजी, हुसैन उदयपुरी और प्रधानाचार्य ज़ोहरा खान ने शिरकत की। इसमें बच्चों ने नात पेश की तथा हज़रत मोहम्मद साहब की जीवनी पर रोशनी डाली। अध्यापिका रिज़वी ने आभार जताया।

इसी तरह बोहरा यूथ पब्लिक सीनियर सैंकंडरी स्कूल परिसर में जश्ने ईद मीलादुन्नबी मनाया गया। जिसमें मेहमाने खुसूसी श्री जैनुद्दीन, कन्वीनर हुसैन उदयपुरी, प्रधानाचार्य कमरूद्दीन चिश्ती, सहायक प्रधानाचार्य श्रीमती रशीदा टेलर आदि ने शिरकत की। अध्यापिका नफीसा अत्तारी ने आभार जताया।

हज़रत ईमाम हसन का यौमे शहादत मनाया गया

बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमात की ओर से खारोल कोलोनी स्थित मस्ज़िद में हज़रत ईमाम हसन (अ.स.) की शहादत बहुत श्रृद्धा, अकीदत और अहतराम के साथ मनायी गयी।

मुल्ला अली मोहम्मद साहब की सदारत में शहादत की मजलिस हुई, जिसकी शुरूआत तिलावते कुरान से हुई बाद में वाअज, तकरीरें, नजमें, व मनकबत पढ़ी गई एवं नियाज का आयोजन किया गया। इस मौके पर हज़रत ईमाम हसन के सादा जीवन एवं उच्च विचारों पर रोशनी डाली गई। इसमें बड़ी संख्या में लोगों ने शिरकत की। महिलाओं की भी भीड़ थी और परीक्षा की तैयारी के बावजूद विद्यार्थियों ने हाज़री देकर अपने इमाम को खिराजे अकीदत पेश की।

मुल्ला पीरखान साहब ने भी पंजतन पाक की शान का जिक्र किया। मजलिस का समापन दुआईया कलेमात के साथ हुआ, सुधारवादी आंदोलन को फैलाने और मज़बूत करने व मुल्क में अमन चैन एवं खुशहाली के लिए दुआए मांगी गई।

– हुसैन उदयपुरी

कुरआन, अहादीस और नहजुल बलाग़ह

I कुरान पाक:

सुरः अल बकरः यह सुरः तरतीब में दूसरी और नुजुल के अनुसार 91 (इकानवे) नं0 की है। यह सुरः मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई। इसमें 286 आयात और 40 रूकुअ हैं।

तर्जुमा आयात 1 से 5

1.अलिफ लाम मीम (की क़सम)

2.यह किताब, इसमें ज़र्रा बराबर भी शक नहीं कि यह हिदायत देने वाली है तक़वा वालों के लिये।

3. तक़वा वाले वह लोग जो गैब (छुपी हुई चीज़ें) पर ईमान रखते हैं, नमाज़ को क़ायम करते है और जो कुछ हमने (याने अल्लाह ने) रोज़ी दी हैं, उसमें से खर्च करते हैं। याने ज़कात देते है।

4. और वह लोग जो कुरआन पर ईमान लाते हैं, जो आप पर (याने मोहम्मद स.अ.व.स. पर) नाज़िल हुआ है और वह किताबे (और सहीके) जो आपके पहले नाज़िल हुवे हैं और जो आख़िरत (याने क़यामत) पर यक़ीन रखते हैं।

5. एसे लोग अपने रब की तरफ से आने वाली हिदायतों पर हैं और एसे ही लोग कामयाब है।

(माखुजः इस्माइली तफसीर पहली मंजिल – शेख अहमद अली जी (रे.अ.))

टिप्पणीः

इससे पहले हमने सुरः फातेहा (अलहमद की सुरः) की आयात का तर्जुमा पेश किया था। फातेहा नाम इसलिये रखा गया है कि वह कुरआन मजीद को खोलने वाली है। उस सुरः में अल्लाह सुब्हानहु ने अपने बन्दों से एक तरह की दुआ करवाई है कि वह अल्लाह से हर वक्त एसी ही दुआएँ करते रहें। खास कर सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की दुआ।

सुरः

बकरः तरतीब में दूसरी है और यहीं से कुरानी हिदायात और अहकामात शुरूअ होते है। तो ऊपर वाली पाँच आयात कुरआन शरीफ किन लोगों के लिए हिदायत है, इसकी वज़ाहत (खुलासा) करती है कि यह किताब हिदायत है, उन लोगों के लिए जो मुत्तक़ीन (याने तक़वा रखने वाले) है।

पहली आयत में इरशाद है कि यह क़िताब (कुरआन) ''बेशक'' हिदायत है मगर तक़वा वालों के लिए। इसके साथ ही अगली तीन आयात में अल्लाह (सु व त) ने यह साफ किया है कि कौन–कौन से लोग मुत्तक़ीन होने के क़ाबिल है याने मुत्तकीन को qualify किया है। फिर पाँचवीं आयत में फरमाता है कि एसे ही लोग हिदायत पायेंगे इस किताब (कुरआन) से और एसे ही लोग दुनिया में और आख़िरत में कामयाब होंगे।

सबसे पहली शर्त मुतक्कीन की यह है कि वेह ''गैब'' पर ईमान रखते है। ''गैब'' का सरल मतलब है जो छुपा हुआ हैं, जो दिखाई नहीं देता। मसलन खुद अल्लाह तआला। तो अल्लाह पर ईमान, कुरआन में जिन आम्बाया और रसूलों का ज़िक्र है वे सब भी कहीं मौजुद नहीं थे और न अभी हैं, मगर उन पर ईमान लाना, ऐसी किताबें और सहीफे जिनका जिक्र कुरआन में हैं वे भी खालिस हालत में न तो मौजुद थे और न है, मगर उन पर भी ईमान लाना, कुरआन में बहुत सारे वाकियात बयान किये गए हैं, जिसे ''कससुल कुरआन'' (कुरआन में दर्ज किस्से) कहा जाता है, उन पर ईमान, कुरआन कयामत के बारे में बार–बार चेतावनी देता है, मगर कब होगी यह नहीं तो उस पर ईमान, कुरआन, जन्नत और जहन्नुम के बारे में और उनकी कैफियत पर बयान करता है, तो यद्यपि यह नहीं बताया गया कि ये कहा है, मगर उन पर भी ईमान रखना। जब यह अकायत होंगे और इन पर ईमान रखा जायेगा तब ही कुरआन हिदायत वाली किताब साबित होगी।

तो हम देखते हैं कि किस तरह शुरूअ ही में अल्लाह (सु.व.त.) ने चेता दिया है कि हिदायत अगर पानी है, कुरआन से तो पाठक को कैसा होना चाहिए। अगर यह qualifications नहीं तो फिर एसों के लिए कुरआन हिदायत साबित नहीं हो सकेगी।

अल्लाह तआला हमें उनकी बताई हुई ''मुतक्कीन'' की qualifications (योग्यता) हासिल करने की नेक तौफीक अता करे और कुरआन की हिदायत से फैज़याब करे। आमीन!

हवाला – इस्माईली तफसीर – शेख अहमद अली राज (रे.अ.)

II अहादीस

1. तदवीर आधी ऐश (आराम) है।
2. आपस में प्रेम से रहना आधी अक्ल है।
3. हम्म–ग़म्म (चिंता) आधा बुढ़ापा है।
4. अच्छा सवाल (प्रश्न) आधा इल्म (शिक्षा) है।
5. देन (कर्ज़) ऐब है (इससे आबरू जाने का खतरा रहता है)

माखुजः मजमउल बहरेन हिस्सा पहला– शेख अहमद अली राज़ (रे.अ.)

III नहजुल बलाग़ह

(तहता कलामिल ख़ालिक व फौक़ा कलामिल मख़्लूक – ईश्वर वाणी (कुरान) से नीची और मनुष्य वाणी से उच्च स्थान वाली पुस्तक है नहजुल बलाग़ह)

(इसमें इब्तिदाए आफ़रीनिशे ज़मीन व आसमान (पृथ्वी व आकाश की सृष्टि का आरम्भ) और पैदाइशे आदम (आदम की उत्पत्ति) का ज़िक्र (वर्णन) फ़रमाया है।)

तमाम हम्द (समस्त वन्दना) उस अल्लाह के लिये है, जिस की मदह (प्रशंसा) तक बोलने वालों की रसाई (पहुंच) नहीं, जिसकी नेअमतों (प्रदानों) को गिनने वाले गिन नहीं सकते। न कोशिश (प्रयत्न) करने वाले उसका हक़ अदा कर सकते हैं, न बलन्द पर्वाज़ हिम्मतें उसे पा सकती हैं, न अक्ल़ (बुद्धि) व फ़हम (समझ) की गहराइयां उसकी तह तक पहुंच सकती हैं। उसके कमाले ज़ात (पूर्णतम अस्तित्व) की कोई हद (सीमा) मुअय्यने (निश्चित) नहीं।

माखुज : नहजुल बलाग़ह प्रकाशक तब्लीगे इमानी मुम्बई संस्करण 1996

- Mansoor Ali Bohra

To be continued next month

9 (नौ) का अ़दद और उसकी एहमियत

इल्मुल्अ़दाद एक निहायत पाकीज़ा और रियाज़ी इल्म है और निहायत ही कारआमद और मुफ़ीद चीज़ है। ईकाइयाँ एक से शुरू हो कर 9 (नौ) पर खत्म होती हैं। इसके बाद तकरार शुरू हो जाती है। जैसे 1–2–3–4–5–6–7–8–9 यह ईकाइयाँ हैं। अब इनके बाद 10–11 तो, तकरार शुरू हो जाती हैं। यूँ तो हिन्दसे की अपनी एक खुसुसियत है। लेकिन इनमें 9 (नौ) के अ़दद को एक इम्तेयाज़ी हैसियत हासिल है। 9 (नौ) का अ़दद लाफानी (कभी खत्म नहीं होने वाली) है। उसकी मिसाल इस तरह हैं :–

9 X 1 = 9, 9 X 2 = 18 अब 1 + 8 = 9,

9 X 3 = 27 अब 2 + 7 = 9, 9 X 4 = 36

अब 3 + 6 = 9,

इस तरह आप इनके अ़दद को जोड़ते चले जाय हर वक्त हासिल 9 आएगा।

अब आईये इस्लाम में 9 (नौ) के अ़दद की एहमियत देखें:–

1. इस्लाम का एक बुनियादी सतून है हज, जो कि 9 ज़िल्हज़्ज़ा को होता है।
2. रमज़ानुल मुबारक का महीना साल का 9वाँ महीना है।
3. हुज़ूर सलल्लाहो अलेहे वस्सल्लम की उम्र शरीफ 63 साल 6 + 3 = 9
4. हज़रत अ़ली की उम्र शरीफ भी 63 साल है 6 + 3 = 9
5. कुरआन के अ़दद 351, 3 + 5 + 1 = 9
6. आदम के 45 = 4 + 5 = 9
7. कर्बला के 72 शहीद 7 + 2 = 9
8. फातिमा (अ.स.) के अ़दद 135 = 1 + 3 + 5 = 9
9. हमल का Period 9 महीनें
10. हादीर खुम के अ़दद 1854 = 1 + 8 + 5 + 4 = 18 = 1 + 8 = 9
11. सात आसमान और अर्शो कुर्सी कुल 9
12. हदीरूल्खुम का वाक़िया 18 जिल्हज़्ज़ 1 + 8 = 9
13. रूहानी मकूल 9
14. अबूतुराब के अ़दद 612 = 6 + 1 + 2 = 9
15. मौला अ़ली नौवे वसी
16. हक़ के अ़दद 108 = 1 + 0 + 8 = 9
17. हई के अ़दद 18 = 1 + 8 = 9
18. उम्मुल किताब के अ़दद 495 = 4 + 9 + 5 = 18 = 1 + 8 = 9
19. इन्सान के जिस्म में 9 द्वार हैं (नौ द्वार का पिजंरा तामें पंछी पोन = रेहने को आधरज है गये अछम्बकॉज)

- Compiled by Fakhruddin R.V. from Jurrat August 29, 1995

HOMOEO HEALTH CARE (होम्योपैथिक क्लीनिक)
Superspeciality Homeopathic Treatment
Dr. Raj Kumari Jain
B.H.M.S.
Regi. No. : 14376
Time : 4 to 7 P.M.
Cont. No. - 9460928082
E-mail : dr_hhc@yahoo.co.in
Superspeciality in :-
✦ Allergy - एलर्जी
✦ Asthma - अस्थमा
✦ Acidity - एसिडिटी
✦ Children disease - बच्चों के रोग
✦ Diabetes - शुगर
✦ Female Disease - स्त्री रोग
✦ Hair Fall - बाल गिरना
✦ Headache - सिर दर्द
✦ Joint Problem - गाठिया रोग
✦ Psoriasis - सोरायसिस
✦ Pimple - पिम्पल
✦ Skin disease - चमड़ी रोग
✦ Sinusitis - साइनस
✦ Weakness - अशक्ति
पता : बोहरा जमात खाना के पास, भूतमहल रोड़, बोहरावाड़ी, उदयपुर
Ex. Doctor of Dr. Batra's Positive Health Clinic (Baroda)
Lecturer in Homeopathic Medical College (Dabok) Udaipur
A Treatment without side effect, Painless treatment only require Regularity, Faith & Patience.

Sanwa Enterprises
Loha Bazaar, Chamanpura, Udaipur (Raj.)
Deals in :
Modular Kitchen, Chimni, Hardware & Machine
STOCKIST : GODREJ LOCKS

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy Muslim Women's Newsletter.

Maharashtra Zilla Parishad gets Muslim lady as president

This is the first time in the history of Akola Zilla Parishad when a Muslim woman is heading it. Sabia Anjum Saudagar was elected president of Akola Zilla Parishad in the elections held recently.

Sabia has been a member of a regional party Bhari Bahujan Mahasangh for last five years, but as a candidate of the party she participated in the elections only in November 2008 and in her first attempt she attained success.

"My husband Muhammad Naseem Saudagar has been in the party for 10-15 years but I have joined it only five years back. By the grace of Allah I stood in the Zilla Parishad election for the first time and succeeded," Sabia said.

Since she belongs to a poor family doing a business of selling bangles she knows the sufferings of people, therefore she wants to give more attention to the economic uplift of the poor sections of the society.

She defeated her rival of Shiv Sena in the election held for the presidency of the Zilla Parishad. She secured 27 votes out of total 45 while her rival Gaytri Kambe got only 18.

- Abdul Hameed, TwoCircles.net

Bhopal's Zeenat Noor in PM's Box for R-Day parade

Zeenat Noor of Bhopal rubbed shoulders with Prime Minister Dr Manmohan Singh when she witnessed the Republic Day parade from the Prime Minister's Box at Rajpath in New Delhi on January 26 this year.

Zeenat, daughter of Zahid Noor, an ex-employee of Indian Airlines, was selected for this honor by the Union HRD Ministry, Department of Higher Education, for her overall excellence in the education field. She was among the participants of university/school toppers to watch the Republic Day Parade with the Prime Minister.

She is an accomplished teacher and taught English in T.I.M.E , Career Launcher and other institutes together with in Arushi, an NGO working for the visually impaired.

Ms Zeenat has an excellent academic record and is at present pursuing her Ph. D. degree from English and Foreign Language University, (EFLU), in Hyderabad. She did her post-graduation in English Literature from Barkatullah University.

Iraqi women's affairs minister resigns in protest

Iraq's minister of women's affairs resigned recently in protest at a lack of resources to cope with "an army of widows, unemployed, oppressed and detained women" after years of sectarian warfare.

Nawal al-Samarai said her status as a secretary of state and not a full minister reflected the low emphasis given by the government to the plight of women in Iraq, once one of the most progressive countries in the Middle East for women's rights.

"This ministry with its current title cannot cope with the needs of Iraqi women," said Samarai, who was appointed in July.

Samarai said her department had only been assigned a single office in the heavily protected Green Zone in Baghdad where many government offices and foreign embassies are located. She had no offices in the provinces where the needs of women were greatest.

"Because there is not a single office in any province, how can any Iraqi woman reach me or send me her complaints?" she said.

Doyen Shamshad Begum recalls bittersweet moments

Shamshad Begum, the playback singer who was the reigning queen of song addicts' hearts, has never been saddened over the fact that music directors whose careers she aided in creating, cold-shouldered her after achieving the pinnacle of success.

An announcement was finally made on Republic Day to confer the Padma Bhushan on the lady who bade goodbye to tinsel town about four decades back and is leading a quiet life at her home in Mumbai's Powai suburb. The 90-year-old is to also receive the O P Nayyar Award for her notable contribution to playback singing. She declined to accept the Rs 25,000 cash component of the latter honour and expressed a desire that the sum be spent on religious works.

Born at Amritsar in 1919, she began her singing career with Lahore Radio in 1937, reached Mumbai in 1944 on the urging of producer-director Mehboob Khan and -- despite her lack of formal education in music -- became the numero uno favourite of all music directors, courtesy her clear and melodious voice.

The songs she sang -- for music directors such as Khemchand Prakash, Shyam Sundar, Nayyar, Ram Ganguly, Madan Mohan, Sachin Dev Burman, Naushad and C Ramchandra -- became immensely famous.

Shamshad, who lent her voice to more than 5,000 songs in five languages, reigned supreme for about two-and-a-half decades in Bollywood. She has no objection to remixes of many of her songs.

In a recent interview that broke years of silence, Shamshad recalled her key role in the formative stages of the careers of producer-director Raj Kapoor and Madan Mohan, but the latter avoided her after the success of his maiden film 'Aankhen' for which Shamshad sang.

2 Muslims women among 133 Padma awardees for 2009

Of all 133 Padma awardees in three categories of the Padma awards for 2009, 12 were Muslims with Muslim women getting one-third of it.

10 of 12 Muslim awardees got Padma Shri award while the other two Padma Bhushan award. In all, 93 people got Padma Shri award while 30 were awarded with Padma Bhushan. In the top category of Padma awards namely Padma Vibhushan there is no Muslim among 10 recipients.

Two Muslim Padma Bhushan awardees were Shamshad Begum from Maharashtra in the field of Art and Dr Khalid Hameed, NRI/PIO in the field of Medicine.

- Mumtaz Alam Falahi, TwoCircles.net,

The title was the best way to make a comeback: Sania

India's star tennis player Sania Mirza has said that winning the Australian Open mixed doubles title with Mahesh Bhupathi was the best way she could make a comeback in the international circuit.

"It is very special to win your first Grand Slam. After the injury it is a great way to come back. I am just living in the moment for now," said Sania.

For Sania, who was making a comeback from a wrist injury, it was her maiden Grand Slam title and also the first by an Indian woman. The injury forced the 22-year-old Hyderabadi out of international circuit for most part of 2008 and she was out of top-100 in singles rankings.

Sania had also won the junior girls doubles at Wimbledon in 2003 with Russian Alisa Kleybanova.

For Bhupathi it was his 11th Grand Slam and seventh mixed doubles title. "We played very well. Yes, definitely we will continue this pair," he said.

The 34-year-old Bhupathi also finished runners-up in the men's doubles with Mark Knowles of the Bahamas. They lost the title clash to Bob and Mike Bryan of the US.

Courtesy: IANS

THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans
We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch Ph: 0294 2422461 M: 9928790762	Dhan Mandi Branch Ph: 0294 2422355 M: 9828162044	Bada Bazar Branch Ph: 0294 2420429 M: 9414738065

Fatehpura Branch Ph: 0294 2450762 M: 9828195535	Madhuvan Branch Ph: 02942423542 M: 9460402651	Hiran Magri Branch Ph: 0294 2460893 M: 9414786877	Krsihi Mandi Branch M: 946030453

Rajsamand Branch Ph: 95 2952 224022 M: 9460415822	Salumber Branch Ph: 95 2906 231250 M: 979903464	Fateh Nagar Branch Ph: 95 2955 220316 M: 9929996972

प्रजातंत्र, चुनाव और अल्पसंख्यक

– डॉ. असगर अली इंजीनियर

देश में आम चुनाव कुछ ही महीने दूर हैं। सभी राजनैतिक दल चुनाव जीतने के लिए अपनी–अपनी रणनीतियॉं बनाने में जुटे हुए हैं। आम चुनाव, राजनैतिक पार्टियों की परीक्षा की घड़ी होती है। उन्हें मतदाताओं को अपने क्रियाकलापों का हिसाब देना होता है। हर पॉंच साल के अंतराल से उन्हें मतदाताओं का दिल जीतना पड़ता हैं। उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा धार्मिक और जातीय समूहों का समर्थन हासिल करने के लिए प्रयास करना होता है। अगर किन्हीं धार्मिक समुदायों या जातियों के हित एक दूसरे से टकराते हैं, तो राजनैतिक दलों को बीच का कोई रास्ता खोजना पड़ता है।

मुसलमान भारत की आबादी का 15 प्रतिशत हैं और किसी भी पार्टी की जीत या हार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उत्तरप्रदेश और बिहार में तो मुसलमानों के समर्थन के बिना किसी भी पार्टी के लिए चुनाव जीतना मुश्किल काम है।

स्वतंत्रता के बाद से लेकर लगभग चालीस सालों तक मुसलमान इन दोनों राज्यों में ऑख बंद करके कांग्रेस का साथ देते रहे और कांग्रेस उत्तरप्रदेश और बिहार में बिना किसी रूकावट के लगातार सत्ता में बनी रही। जैसे ही मुसलमानों ने कांग्रेस का साथ छोड़ा, उसने ये दोनों राज्य खो दिए। कांग्रेस ने उत्तरप्रदेश को तभी खो दिया था, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गॉंधी ने राम मंदिर का शिलान्यास किया था और बाबरी मस्जिद के ताले खुलवाए थे। तब से लेकर आज तक कांग्रेस मुसलमानों का विश्वास फिर से हासिल नहीं कर सकी है।

''राम मंदिर'' की लहर पर सवार होकर भाजपा एक बार उत्तरप्रदेश में सत्ता में आ चुकी है, परन्तु काठ की हांडी बार–बार चूल्हे पर नहीं चढ़ती। अपने अच्छे दिनों में भाजपा ने यह दावा किया था कि उसे ''मुसलमानों के वोटों की जरूरत नहीं है'' परन्तु उसी भाजपा का एक ''अल्पसंख्यक सेल'' है और शाहनवाज हुसैन जैसे कुछ नेताओं के जरिए वो मुसलमानों को बड़े बड़े सपने दिखा रही है। भाजपा ने मुख्तार अब्बास नकवी को अपना प्रवक्ता भी नियुक्त कर रखा है।

इस सबके बाद भी भाजपा हिन्दू वोट कबाड़ने के लिए ''राम मंदिर'' मूल मंत्र नहीं छोड़ना चाहती। भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने कहा कि वो एनडीए के अपने साथी दलों को भी इस बात के लिए राजी कर लेगी कि मंदिर निर्माण का रास्ता साफ करने के लिए एक नया कानून बनाया जाए। श्री आडवानी भी यह जानना चाहते है कि मंदिर बनाने में आखिर गलत क्या है। बाबरी मस्जिद को ढ़हाकर एक गल्ती तो वे कर ही चुके हैं तो फिर मस्जिद के मलबे पर राम मंदिर बनाने की दूसरी गल्ती करने में क्या समस्या है।

चुनावी गणित के जानकार कहते है कि आने वाले आम चुनावों में भाजपा के लिए लोकसभा में अपने सदस्यों की वर्तमान संख्या बढ़ाना अत्यंत कठिन होगा। आतंकवाद के कार्ड ने तो मुंबई हमलों के तुरंत बाद भी काम नहीं किया और भाजपा ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में मुंह की खाई। स्पष्टतः आतंकवाद के मुद्दे को भावनात्मक रंग देकर चुनावों में भुनाना अब मुश्किल हो गया है। कुछ महीने पहले जब कीमतों में तेजी से उछाल आया था तब भाजपा को लगा कि उसे एक चुनावी मुद्दा मिल गया है, परंतु भाजपा के दुर्भाग्य से कीमतों का न केवल बढ़ना रूक गया बल्कि वे कुछ हद तक नीचे भी आ गई। मुद्रास्फीती की दर छः प्रतिशत के आस–पास सिमट गई है। इन परिस्थितियों में भाजपा के पास राम मंदिर के गड़े मुर्दे को उखाड़ने के अलावा कोई रास्ता बचा भी नहीं है।

भाजपा कितनी भी कलाबाजियां दिखा ले, लोकसभा में उसकी ताकत बढ़ने वाली नहीं है। उड़ीसा और कर्नाटक में भाजपा की गुंडा विंग ने जो धमाल मचाया है, उससे भी उसकी छवि को गहरा धक्का लगा है। जो लोग भाजपा के समर्थक हैं, उनके लिए भी ईसाइयों और महिलाओं पर हमलों को उचित ठहराना मुश्किल होगा। एक समय था जब ईसाई भाजपा की ओर आकर्षित हो रहे थे। कुछ ईसाई नेता भाजपा में शामिल भी हो गए थे, परंतु उड़ीसा के बाद जार्ज फर्नाडीस जैसे नेताओं के लिए भी भाजपा का बचाव करना मुश्किल होगा। भाजपा ने अपने विरोधियों की संख्या बढ़ा ली है।

उत्तरप्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती और समाजवादी पार्टी के सुप्रीमो श्री मुलायमसिंह सिंह यादव के बीच मुस्लिम वोटों के लिए कड़ा मुकाबला चल रहा है। मुसलमानों को खुश करने के लिए सुश्री मायावती ने घोषणा की है कि उनकी पार्टी मुस्लिम उम्मीदवारों को लोकसभा के 25 प्रतिशत टिकिट देगी। यह पहली बार है कि किसी पाटी ने इस तरह का वायदा किया है। उत्तरप्रदेश के मुसलमानों को इसका स्वागत करना चाहिए। कांग्रेस को भी इससे सबक सीखने की जरूरत है। यह एक तथ्य है कि टिकिट वितरण में कांग्रेस ने कभी मुसलमानों के साथ न्याय नहीं किया।

सुश्री मायावती की घोषणा स्वागतयोग्य तो है, परंतु असली प्रश्न यह है कि जिन सीटों से मुसलमान प्रत्याशी खड़े किए जाएंगे उनमें से कितनी ऐसी होगी जहां से बसपा के जीतने की उम्मीद हो और उनकी पार्टी मुस्लिम उम्मीदवारों की जीत के लिए कितनी कोशिश करेगी। यह भी महत्वपूर्ण है कि जिन मुसलमानों को टिकिट दिए जाएंगे उनकी हैसियत और पृष्ठ भूमि क्या होगी। यह उम्मीद करना बेकार है कि सुश्री मायावती ऐसे मुसलमानों को उम्मीदवार बनाएंगी जिनका ऊँचा राजनैतिक कद और स्वतंत्र व्यक्तित्व हो। सुश्री मायावती केवल अपने पिछलग्गूओं को आगे बढ़ाने के लिए जानी जाती हैं।

इस बीच, मुलायमसिंह यादव ने कल्याण सिंह का हाथ थाम लिया है। कल्याण सिंह वही सज्जन हैं जिनके मुख्यमंत्रित्व काल में 6 दिसंबर, 1992 को बाबरी मस्जिद बढ़ाई गई थी। उन्होंने न केवल इस गैर कानूनी कार्यवाही को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया था वरन् उन्होंने अपनी इस भूमिका पर गर्व का इज़हार भी किया था। मुस्लिम इस घटनाक्रम को भूले नहीं हैं। श्री मुलायमसिंह यादव का दावा है कि उन्होंने उत्तरप्रदेश से भाजपा का सफाया करने के लिए कल्याण सिंह से हाथ मिलाया है, परंतु जहाँ तक मुसलमानों का सवाल हैं, श्री यादव की रणनीति सफल नहीं होगी।

मुलायमसिंह यादव को याद करना चाहिए कि अयोध्या में राम मंदिर की आधारशिला रखवाने के बाद कांग्रेस का उत्तरप्रदेश में क्या हाल बना था। मुसलमानों के दबाव में मुलायम सिंह यादव ने कल्याण सिंह को बाबरी मस्जिद के ढ़हाये जाने के लिए माफी मांगने पर मजबूर तो कर दिया है, परंतु कल्याण सिंह से दोस्ती उन्हें महंगी पड़ेगी। कांग्रेस ने भी कल्याण सिंह और मुलायम सिंह की अचानक हुई दोस्ती पर अपनी नाराजगी व्यक्त की है। श्री मुलायम सिंह यादव ने इसके जवाब में कांग्रेस को दूसरों के मामलों में टांग नहीं फँसाने की नसीहत दी है।

कल्याण –मुलायम गडजोड़ की मुसलमानों के बीच जो तीखी प्रतिक्रिया हुई है, उससे ऐसा लगता है कि यदि मुलायम सिंह यादव को उत्तरप्रदेश के मुसलमानों के वोट चाहिए तो उन्हें कल्याण सिंह से दूर ही रहना होगा। श्री यादव की इस रणनीतिक भूल का फायदा सुश्री मायावती को हो सकता है। मुसलमानों के वोट थोक में बसपा की झोली में जा सकते हैं। कांग्रेस को शायद थोड़ा–बहुत फायदा होगा। भाजपा को तो कुछ नहीं मिलेगा।

बिहार में भाजपा की अपनी जमीन नहीं हैं। वहाँ वह नितीश कुमार की बैसाखियों पर चल रही है ''नितीश कुमार इस बात से नाराज है कि भाजपा, राम मंदिर का मुद्दा उठाकर उनके लिए परेशानी खड़ी कर रही है। नितीश कुमार, कुर्मी है और यादव वोटों पर निर्भर नहीं हैं। उन्होंने पिछड़े मुसलमानों के लिए काम कर रहे दो मुस्लिम नेताओं को अपनी पार्टी से राज्यसभा में भी भेजा है। बिहार की जातिवादी राजनीति पर इसका कोई विशेष असर होने की संभावना कम ही है।

ऐसा लगता है कि नितीश कुमार भी बहुत अच्छी स्थिति में नहीं हैं। उनकी पार्टी शायद ही सन् 2004 के चुनावों से ज्यादा सीटें इस बार जीत सके। वे अपने चुनावी वायदे पूरे नहीं कर सके हैं और किसी नदी की बाढ़ के बाद पुर्नवास और सहायता के काम में हुई बदइंजामी उनके गले की हड्डी बन गई हैं। अगर नितीश कुमार की हालत पतली है तो भाजपा की भी अच्छी नहीं हो सकती क्योंकि बिहार में भाजपा लगभग पूरी तरह नितीश कुमार पर ही निर्भर है।

पिछले कुछ वर्षों से गैर–मुसलमानों की तरह मुसलमान भी क्षेत्रीय मुद्दों को अधिक तरजीह देने लगे हैं। उनके वोटों का बड़ा हिस्सा क्षेत्रीय पार्टियों को जा रहा है। महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश और कुछ ही अन्य राज्य ऐसे हैं जहाँ मुसलमानों के सामने भाजपा के अलावा सिर्फ कांग्रेस को वोद देने का ही विकल्प है। यह स्वागतयोग्य है कि मुसलमान अन्य भावनाओं में बहने की बजाय क्षैत्रीय और जमीन से जुड़े मुद्दों को महत्व देने लगे हैं।

चूंकि अब मुसलमान भावनाओं में बहकर वोट नहीं देना चाहते इसलिए उन्हें क्षेत्रीय पार्टियों से जमकर मोल–भाव करना चाहिए। उनके दो उद्देश्य होने चाहिए एक, साम्प्रदायिक ताकतों को हराना और दो, मुसलमानों के आर्थिक शैक्षणिक विकास और उन्हें राजनैतिक सत्ता में उचित हिस्सेदारी देने के वायदे लेना। उन्हें भावनाओं में कतई नहीं बहना चाहिए और चतुराई से अपने मतों की भरपूर कीमत वसूलनी चाहिए।

यह महत्वपूर्ण है कि जब से मुसलमानों ने उत्तरप्रदेश और बिहार में क्षेत्रीय दलों को समर्थन देना शुरू किया है तब से देश में साम्प्रदायिक दंगों का केन्द्र इन राज्यों से खिसक कर महाराष्ट्र पहुंच गया है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार भी पिछले कुछ वर्षो में सबसे ज्यादा साम्प्रदायिक दंगे महाराष्ट्र में हुए हैं। इस आशय की खबरें मीडिया में भी आई हैं।

महाराष्ट्र में साम्प्रदायिक हिंसा कांग्रेस शासन में हुई है, विशेषकर श्री विलास राव देशमुख के मुख्यमंत्री रहने के दौरान। एनसीपी के आर आर पाटिल भी साम्प्रदायिक दंगों को नियंत्रण में नहीं रख सके। धुले का घटनाक्रम इसका गवाह है, परंतु महाराष्ट्र के मुसलमानों की समस्या यह है कि वहॉं भाजपा शिवसेना गठबंधन का एकमात्र विकल्प कांग्रेस ही है। महाराष्ट्र में कोई क्षेत्रीय दल नहीं है।

महाराष्ट्र के मुसलमानों के लिए यह बड़ी दुविधापूर्ण स्थिति है। जहाँ तक मुसलमानों की अलग पार्टी बनाने का सवाल है, वह रोग को और बढ़ाने वाली दवाई है। जहाँ जहाँ धर्मनिरपेक्ष व स्वच्छ छवि वाले उम्मीदवार उपलब्ध हो, वहाँ मुसलमानों को उन्हें अपना मत देना चाहिए। महाराष्ट्र के मुसलमानों को कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व से सीधे संवाद करना चाहिए। महाराष्ट्र में राज्य स्तर के कांग्रेस नेता श्री बाल ठाकरे से आतंकित रहते हैं। यहाँ तक कि श्री शरद पवार, श्री छगन भुजबल और कांग्रेस के कई अन्य नेता श्री ठाकरे के पैर छूते हैं और उनके साथ लंच–डिनर करते हैं।

प्रजातंत्र में केवल सौदेबाजी ही चलती है। हमारे चुनाव शुद्वतः जाति और धर्म के समीकरणों पर लड़े और जीते जाते हैं। मुसलमानों को चाहिए कि वे सभी राजनैतिक दलों को अपनी ताकत का एहसास कराएं।

- Centre for Study of Society and Secularism Mumbai
E-mail: csss@mtnl.net.in

साम्प्रदायिक दंगे 2008 भाग – 2

To be concluded next month

Letter to the Editor :

विषय – बोहरा जर्नल में छपने वाले आइटम संबंधी कुछ सुझाव।

बोहरा यूथ आंदोलन (तहरीक) से जुड़ीखबरें, लेख व आलेख को प्राथमिकता देते हुए कुछ नयी सामग्री को शामिल किया जाये,

ताकि पाठकों को हर बार कुछ नयी बातें व जानकारियां मिलती रहें। मिसाल के तोर पर ''भास्कर'' में शादी की सिलवर

गोल्डन जुबली पर पाठकों के फोटो संस्मरणं 'जुगलबंदी' हेडिगं से दिए जाते हैं। आजकल सीनियर सिटीज़न के जन्म दिन पर फोटो,फोन नम्बर व पता दैनिक भास्कर में छापा (निःशुल्क) जाता है। हमारे समाज ''यूथ'' में इस तरह लोगों को आवाम से परिचित कराया जा सकता है।

2. बोहरा जर्नल के अंतिम पृष्ठ पर press line (सम्पादक, प्रिंटर, पब्लिशर के नाम) जितनी जगह देते हुए Classified Advt का नया स्तंभ शुरू किया जाए जिसमें शादी–सगाई, घरेलु फर्नीचर, मकान –दुकान देना–लेना वगेरह वगेरह। इस प्रकार ''बोहरा जर्नल'' को आमदनी होगी वही पाठकों को ऐसा माध्यम मिलेगा जो घर–घर तक इश्तिहार पहुंचाकर अपने ही समाज में ऐसी जरूरत पूरी कर सके। मेरिज ब्योरो की तरफ लोगों की रूचि नहीं है।

3. करीब 10 साल पहले बोहरा यूथ की टेलिफोन डायरेक्ट्री जारी हुई थी। चुंकि संचार–माध्यम में बहुत बदलाव आ गया और तकरीबन हर हथेली पर फोन रखा हुआ है, इसलिये समय आ गया कि ''बोहरा जर्नल'' अथवा इससे जुड़ा इदारा एक नई फोन डायरेक्ट्री जल्द तैयार कराऐं। हमारे से भी छोटे समाजों ने अपनी डायरेक्ट्री निकाली हैं। नई छपने वाली directory में परिवार की महिला–पत्नी का नाम भी जोड़ा जाए तो बहुत लोकप्रिय होगा। यह चलन मुंबई की बोहरा डायरेक्ट्री में देखा गया है।

– एफ.अब्बास ब्यावरवाला

तीसरा विश्व सम्मेलन नेरोबी में

सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्युनिटी की ओर से भारत के मुख्य शहरों में अब तक 13 विश्व सम्मेलन हो चुके है और यूरोपी देशों में तीसरा दाऊदी बोहरा समाज का सुधारवादी विश्व सम्मेलन आगामी सन् 2010 अगस्त में केन्या के शहर नेरोबी में आयोजित होगा।

पहला सम्मेलन लन्दन दूसरा केनेडा के बाद अब तीसरा सम्मेलन नेरोबी में आयोजित होगा यह जानकारी नेरोबी एवं मुम्बासा शहर के सुधारवादी दाऊदी बोहरा जमात के जनाब जीवनजी भाई, जनाब जाहिद सज्जन, जनाब आफताब फिदाअली एवं श्रीमती फातिमा बेन ने दी हैं और उन्होंने इसके आयोजन की पूरी तैयारी कर ली है व भारत के सुधारवादी बोहरो से अपील की है के अधिक संख्या में सम्मलित होकर इसे सफल बनावें। इसमें यू.के., यू.एस.ए., केनेडा पूर्वी अफ्रिका और दूसरें देशों के सुधारवादी दाऊदी बोहरा सम्मिलित होंगे।

सम्मेलन का मुख्य प्रसंग भविष्य नीति निर्धारण व लोगों तक अपनी बात पहुंचाना रहेगा। सम्पूर्ण विश्व में फैले सुधारवादी आंदोलन का उद्देश्य इस्लाम के वास्तविक मूल्यों, सर्व धर्म सद्भाव, साम्प्रदायिक सौहार्द व धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र को स्थापित करना है। बोहरा यूथ इन सभी मूल्यों के सूत्रधार हैं एवं सभी का समर्थन भी चाहता है।

– हुसैन उदयपुरी

'Banned from mosque' for questioning leaders

Several Bohra Muslim families from Mumbra have alleged that they have been threatened with social boycott by their Jamaat or community leaders for questioning corruption in distribution of charity funds.

Nafisaben Rassiwala, one of the women who have filed complaints with the Maharashtra State Commission for Women, had applied for housing aid from the Mumbra Dawoodi Bohra Jamaat. She shifted to Mumbra after her house in Goregaon was burnt down in the 1992 riots, she stays with her husband and five children in a tenement provided by the Jamaat.

Rassiwala told the women's commission that she was assaulted during a visit to the trust office to inquire about the aid she had applied for around three years ago. The aid is given by the Mumbai based headquarters of the sect, but is distributed by the local Jammats. "I have been told by the trust headquarters that my aid has been sanctioned. But the local Jamaat has been refusing to release the funds (of around Rs 2 lakhs)," she said.

Sakinabi Balbatti, a counsellor with the Maharashtra State Commission for Women, said,"We are inquiring into the complaint. We are trying to settle the dispute and have issued a summon to the Jamaat officials to hear their views. If the officials do not attend the hearing, we will start legal measures."

Another woman who requested not to be named said. "I applied for aid to buy a house four years ago. People do not complain because they are threatened with social boycott."

Trader Noman Kanchwala, 60, and his family have been banned from the community mosque for the past eight days, after he raised the issue of poor Bohra families being denied the housing aid they had been promised.

But Nasirbhai Akolawala, joint secretary of Dawoodi Bohra Jammat, Mumbra denied the allegations. "We will answer the charges made against us in the women's commission. There is no scope for corruption in the distribution of charity funds because the money is directly distributed by the headquarters."

- Manoj Nair (Mumbai Mirror)

पिछले महीने के जर्नल में हमारे सवाल :

तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए नौजवानों को किस तरह प्रोत्साहित किया जाये ?

हमारे पाठकों के कुछ जवाब.......

बोहरा तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए नौजवानों को प्रोत्साहित कर आगे लाना बहुत ज़रूरी है। इस मजमून के ज़रिए मैं अपने ख्याल बताना चाहती हूँ।

आज जहाँ हर तरफ पढ़ाई और computer पर जोर दिया जा रहा हैं वहाँ ऐसी activities में कोई भी अपने बच्चों को involve करना नहीं चाहता। हमारी तहरीक को मज़बूत बनाना और आगे बढ़ाना भी उतना ही ज़रूरी है, जितना की आज के जमाने में education। आज की generation को ये बताना कि यह तहरीक क्या है? क्यों है?और इसकी जरूरत कब क्यों और कैसे पड़ी, बहुत अहम हैं।

आज यह जानते हुए भी कोई इसे आगे बढ़ाना चाहता है तो उसे फालतू, बेकार और बिगड़ेल कहकर पीछे कर दिया जाता है।

अभी recent में हुए कुछ हादसों में हमारे नौजवानों को जेल भी जाना पड़ा। बहुत बार उन्हें जल्द ही छुड़वा दिया गया, लेकिन कई बार बहुत वक़्त भी लगा, शायद हमारी ही लापरवाही की वजह से।

एक ऐसी actual & active association बनाई जाए जहाँ ऐसे लोग member हो जो actively participate करें और जिनके leaders हमारे बड़े experienced हो जो हमें रास्ता दिखाएं और ज़रूरत पड़ने पर हमारे साथ खड़े रहें।

हमारे महोतरम बड़े बुज़ुर्ग शेख अहमद अली राज जिनके इन्तेकाल के बाद बोहरा यूथ को जो कमी हुई है (जिनकी जगह कोई नहीं ले सकता और जिनसे तहरीक बंधी हुई थी) ऐसे आलिम शख्स जो फिर से तहरीक को बांध सके ऐसे रहनुमा की ज़रूरत हैं जो हमारी तहरीक को, नौजवानों को दीन व दुनिया दोनों की तालीम दे सके।

नौजवानों को तहरीक की शुरूआत से लेकर अब तक के त्वारीखी वाकयात का इल्म होना चाहिए जो हमारे बुज़ुर्गों से मिल सकता है। आज की नई generation सही और गलत में फर्क करना बखूबी जानती है और मेरा यकीन है कि वो ऐसा करेंगे भी। बस ज़रूरत है तो हमारे नज़रिये को बदलने की।

हर कौम, हर मुल्क और हर हुकूमत की बागडोर नौजवानों के हाथों में होती है और वही कौम, मुल्क तरक्की करता है, जिसका जवान अपनी कौम, मुल्क के प्रति वफादार है। यही जज्बा हम अपने और अपने भाई–बंध में पैदा करें तो कौम की तरक्की को कोई नहीं रोक सकता।

किसी शायर ने क्या खूब कहा है –

''उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की खुदी सूरते फ़ौलाद।''

– नाज़नीन ताहेरा खोलिया

हमें मरहूम हाजी शेख अहमद अली राज की लिखी किताबों से जानकारी लेनी चाहिए एवं उन किताबों को पूरी तरह पढ़कर समझ कर तथा दूसरे (युवाओं) को समझाकर तहरीक को आगे बढ़ाया जा सकता है।

व्यक्ति या समाज वही तरक्की करता है जो समय की इज़्ज़त करता है। तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए समय का पाबंद होना चाहिए। नेता या सम्बन्धित व्यक्ति को चाहिए कि वह समय की पांबदी का खास तौर से ध्यान रखे वरना समय की पाबंदी न होने की वजह से तहरीक को आगे बढ़ाना मुश्किल है।

नौजवानों को अपने दिल व दिमाग को हमेशा खुला रखना चाहिए। किसी भी व्यक्ति या नेता के कहने पर बिना सोचे अमल नहीं करना चाहिए। नौजवानों को आगे पीछे सोचकर तथा कार्य के परिणाम को सोच कर ही उस बात पर अमल करना चाहिए।

नौजवानों को अपनी बात कहने का पूरा हक होना चाहिए अगर कोई युवा अपनी परेशानी लेकर आता है तो परेशानी से सम्बन्धित व्यक्ति को उसे सही तरह से जवाब देना चाहिए। बिना परेशानी को हल किए उस परेशानी/समस्या को बीच में नहीं छोड़ना चाहिए। अगर सम्बन्धित व्यक्ति परेशानी/समस्या को हल नहीं कर सकता हो तो उसे युवा को साफ मना करना चाहिए कि ''मैं आपकी समस्या/परेशानी को हल नहीं कर सकता हूँ'' उस युवा को गुमराह नहीं करना चाहिए। अगर युवा गुमराह हो जाएगा तो तहरीक को आगे बढ़ाने में मुश्किल आएगी।

– अबुतूराब ओड़ा

Editorial Board:

Editor: Razia Sanwari; Editorial Assistants: Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji, Fazal Abbas Beawar Wala

Advisory Board: Abid Adeeb; Mansoor Ali Bohra; Hussain Udaipuri; Yaqub Ali Zaheer; Mansoor Ali Nathdwarwala; Yusuf R.G.

Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

Tel: 91-0294-2521719; Fax: 91-0294-2524886; email: bohra.journal@hotmail.com

Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur - 313001

POSTAL ADDRESS

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit http://dawoodi-bohras.com/

Disclaimer: The views published in this publication are solely the contributors'. The Editor and editorial board holds no responsibilities for it.